R.N. Sharma
J.M.S. College Munger
Date 07.5.20

B.A. Part-II Philosophy (H) – paper-IV

Descartes on Cogito ergo sum

देकार्त दार्शनिक होने के पहले एक गणितज्ञ थे और शायद इसीलिए सत्य का जो स्वरूप एवं आदर्श गणित शास्त्र में मौजूद था उसे वे दर्शनशास्त्र में लाना चाहते थे। जिस प्रकार गणित के कुछ स्वयंसिद्ध आधारों से एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचते हैं, जिनकी सत्यता में किसी भी प्रकार का अविश्वास नहीं किया जा सकता। इन्हें सबों को मानना आवश्यक है, ठीक उसी प्रकार यदि दर्शन में भी कुछ स्वयं सिद्ध सत्यों को आधार मानकर चला जाय और उससे तार्किक निष्कर्ष निकाला जाय तो इस क्षेत्र में भी वैसे सत्यों की प्राप्ति की जा सकती है जो निश्चित, निःसंदेह और सबों के लिए समान रूप से सत्य हो। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए देकार्त ने पूर्व स्थापित सत्य में अविश्वास कर स्वं बिल्कुल अनभिज्ञता प्रकट किया। इनके अनुसार स्वतंत्र ढंग से प्रारम्भ में यह देखा जाय कि उससे दर्शन में कुछ ऐसी चीज प्राप्त की जा सकती है या नहीं। इसके लिए देकार्त ने जानबूझकर सभी प्रकार के ज्ञान में संदेह करना शुरु किया। दर्शन में इनकी यह एक अपूर्व देन है।

देकार्त के जानबूझकर सभी प्रकार के ज्ञान की सत्यता में अविश्वास करने के पीछे जो लक्ष्य था वह यह था कि सभी प्रकार के ज्ञानों में संदेह कर देखा जाय कि आखिर संदेह की कहीं सीमा है या नहीं, संदेह के सिलसिले में कोई ऐसा बिन्दु मिलता है या नहीं जहाँ ऐसे सत्य की प्राप्ति हो जो असंदिग्ध, निश्चित एवं स्वयंसिद्ध हो। इस लक्ष्य को सामने रखकर देकार्त ने एक-एक कर बुद्धिजन्य तथा इन्द्रियजन्य सभी प्रकारों के ज्ञानों में संदेह करना शुरु किया। इन्द्रियजन्य ज्ञान के विषय में तो उन्होंने यह कह दिया कि ऐसे ज्ञानों में प्रायः भ्रम ही हुआ करते हैं। इसलिए ऐसे ज्ञान को सत्य होने की कोई गारंटी नहीं है। बुद्धिजन्य ज्ञान को हम निःसंदेह मानते हैं। जैसे दो जोड़ दो चार होते हैं (2+2=4) इसलिए बुद्धिजन्य ज्ञान को संदिग्ध होने का कोई सवाल ही नहीं उठता है।

सभी प्रकार के ज्ञानों की सत्यता में संदेह करने की इस क्रिया में देकार्त को एक बात बिल्कुल असंदिग्ध नजर आयी और वह यह कि संदेह करने की क्रिया चल रही है। सभी चीजों में संदेह किया जा सकता है। परन्तु इसमें संदेह नहीं किया जा सकता कि 'संदेह किया जा रहा है या संदेह करने की क्रिया चल रही है।'

संदेह करने की क्रिया वस्तुतः विचारने की क्रिया है और यदि विचारने की क्रिया चल रही है तो अवश्य ही कोई विचारक होगा, जिसके अंदर विचार करने की क्रिया चल रही है। इसलिए देकार्त को एक असंदिग्ध सत्य प्राप्त हुआ और वह यह कि सभी चीजों में संदेह किया जा सकता है, परन्तु संदेह करने वाले में या विचार करने वाले में संदेह नहीं किया जा सकता। इसलिए सभी चीजों पर संदेह करने की क्रिया में एक चीज असंदिग्ध रूप से हमारे समक्ष आती है और वह है – 'एक संदेहकर्ता का निःसंदेह अस्तित्व।'

इसी तथ्य को देकार्त ने 'Cogito ergo sum' के माध्यम से व्यक्त किया। जिसका साधारण अर्थ है – 'मैं सोचता हूँ इसलिए मैं हूँ' – 'I think therefore I exist.' यह इनका प्रथम असंदिग्ध सत्य है। देकार्त का यह वाक्य अनुमान की उदाहरण है। इसमें विचारने की क्रिया के आधार पर एक विचारक के अस्तित्व का अनुमान किया गया है। उपरोक्त वाक्य कुल इस प्रकार की क्रिया है –

What ever thinks also exists,
I think
therefore I exist.

इससे ऐसा प्रतीत होता है कि देकार्त ने असंदिग्ध सत्य को एक अनुमान के आधार पर सिद्ध किया है। परन्तु ऐसा समझना देकार्त के उपरोक्त वाक्य के वास्तविक स्वरूप के प्रति एक नासमझी होगी। वस्तुतः 'I think' वाक्य की स्थापना देकार्त किसी अनुमान की क्रिया से नहीं करते, बल्कि उनका समूचा वाक्य "I think therefore I exist." (Cogito ergo sum) एक अनुभूति (Intuition) का ज्ञान है। इसकी सत्यता बिल्कुल स्पष्ट और स्वयंसिद्ध है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि उपरोक्त सम्पूर्ण वाक्य एक ऐसा स्वयं सिद्ध सत्य है जिसे देकार्त ने एक ही बार में अपने अंदर (अनुभूति को) अनुमान के आधार पर स्थापना नहीं की। वे एक ऐसे 'mind' या 'Self' की स्थापना करना चाहते थे जो सभी प्रकार के ~~ज्ञानों पर संदेह किया जा सकता है, परन्तु~~ विचारने तथा ज्ञान की क्रिया का आधार हो। सभी प्रकार के ज्ञानों पर, अस्तित्वों पर संदेह किया जा सकता है, परन्तु उस संदेह की क्रिया में संदेह करने वाली एक आत्मा, जिसमें असंदिग्ध अस्तित्व निहित है, उस पर किसी प्रकार का संदेह नहीं किया जा सकता है।

देकार्त ने किसी भी प्रकार के object के अस्तित्व के पहले ज्ञाता या Subject के अस्तित्व को आवश्यक समझा। ज्ञाता का अस्तित्व ही असंदिग्ध सत्य है। अन्य सभी सत्य इसी असंदिग्ध सत्य पर आधारित होंगे। इस तरह ये संदेह विधि से एक ऐसी असंदिग्ध तथ्य को प्राप्त करना चाहते थे जिसे दर्शन का First principle बनाया जा सके और इसी के आधार पर अन्य सभी तथ्यों की स्थापना एवं व्याख्या की जा सके। ऐसा तथ्य

Scanned with CamScanner

असंदिग्ध तथ्य देकार्त का Cogito ergo sum है। सचमुच यह पहला स्वयं-सिद्ध सत्य है, जिसके आधार पर वे ईश्वर की सत्यता सिद्ध करने के उपरान्त दर्शन में आत्मा, ईश्वर तथा विश्व में एक systems का निर्माण करते हैं।

देकार्त के Cogito से सत्यता की दो कसौटी -

Clearness (स्पष्टता) एवं Distinctness (विशिष्टता या स्फुटता) प्राप्त होती है। स्पष्ट वह है जिसका अर्थ और बोध हमें साफ रूप में दीखे। ठीक इसी तरह स्फुट वह है जो इतना निश्चित और स्पष्ट हो कि उसे किसी अन्य किसी चीजों में मिल जाने या उलझ जाने की संभावना न हो। सत्यता की इन्हीं दो कसौटियों के आधार पर देकार्त ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करते हैं। देकार्त मानते हैं कि हमारे मन के अंदर तीन तरह के प्रत्यय (Idea) है - (i) स्वरचित (जन्मजात प्रत्यय) - Innate Ideas
(ii) कल्पना रचित (Fictitious)
(iii) बाह्य रचित (Adventitious)

जो कल्पना द्वारा उत्पन्न होते हैं, उसे कल्पना रचित प्रत्यय कहा जाता है और जो बाहरी पदार्थों से रचित होते हैं, उसे बाह्य रचित प्रत्यय कहा जाता है। स्वरचित अर्थात् जन्मजात प्रत्यय मनुष्य के मस्तिष्क में जन्मकाल से ही विद्यमान रहते हैं। ये ईश्वर प्रदत्त हैं। आत्मा, ईश्वर, द्रव्य कार्य-कारण-नियम आदि का ज्ञान जन्मजात है। यह शाश्वत एवं सर्वज्ञ आदि है।

अब प्रश्न उठता है कि इस प्रकार का प्रत्यय हमारे अंदर कहाँ से आया? क्या इसके कारण हम स्वयं हैं? इसके उत्तर में देकार्त का कहना है कि हम अपने आप में अपूर्ण हैं और यह प्रत्यय स्पष्ट, पूर्ण एवं स्वयंसिद्ध है। एक अपूर्ण सत्ता, पूर्णसत्ता के प्रत्यय का कारण नहीं हो सकता। कारण को कम से कम कार्य की बराबरी का होना चाहिए। इसलिए हमारे अंदर जो एक शाश्वत एवं पूर्ण ईश्वर का प्रत्यय है, उसका कारण एक पूर्ण ईश्वर रूपी सत्ता के अतिरिक्त और कोई दूसरा नहीं हो सकता। जब ईश्वर की सत्ता प्रमाणित हो जाती है तो उसी के आधार पर देकार्त बाह्य जगत की वस्तुगतता एवं सत्यता को सिद्ध करते हैं। वे कहते हैं कि संसार का स्रष्टा ईश्वर है और यदि संसार सत्य तथा वस्तुगत न हो तो फिर ईश्वर धोखेबाज सिद्ध होगा। चूँकि उसने एक ऐसा संसार बनाया है, जो सत्य लगता है, परन्तु सत्य है, नहीं।

Scanned with CamScanner

ईश्वर को धोखेबाज नहीं माना जा सकता। उसे सद्गुणों का भंडार माना जाता है। अतः ईश्वर के अस्तित्व से विश्व की सत्यता सिद्ध हो जाती है।

उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि Cogito ergo sum देकार्त के दर्शन का एक First principle है, जिसके आधार पर वे सत्यता की दो उपरोक्त कसौटियों से ईश्वर को सिद्ध करने का प्रयास करते हैं। इस तरह उनके दर्शन में आत्मा, ईश्वर तथा भौतिक जगत में एक system का निर्माण हो जाता है।

दिनांक- 07/5/20

डॉ० रामनारायण शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर
दर्शनशास्त्र विभाग
डॉ० श्या० प्र० मु० विश्व.
[illegible]